हिन्दु-दर्शन में काम को सदैव व्यापक अर्थ में लिया जाता है इन्द्रिय पर नियंत्रण रखते हुए उन्हें तृप्त करना आवश्यक समझा जाता है यहाँ इन्द्रियों के दमन की बात नहीं की जाती। इन्द्रियों की स्वाभाविक प्रवृत्तियों को कभी कुचलने की सलाह नहीं दी जाती है

डा० राधाकृष्णन के अनुसार In Hindu religion, there is nothing unwholesome about the sex life. अर्थात् हिन्दुधर्म में यौन-जीवन को किसी भी प्रकार अनैतिक नहीं माना है।

(IV) मोक्ष (Liberation) - चौथा और अंतिम पुरुषार्थ मोक्ष है चार्वाक को छोड़कर सभी भारतीय विचारक मोक्ष को जीवन का नि:श्रेयस मानते हैं मोक्ष के स्वरूप और इसकी प्राप्ति के साधनों को लेकर विचारकों में काफी मतभेद पाया जाता है मोक्ष का सामान्य अर्थ यह है कि - मोक्ष एक ऐसी अवस्था है जहाँ दुःखों का पूर्ण अभाव रहता है कुछ लोगों ने इस अवस्था को केवल दुःखरहित अवस्था कहा है परन्तु कुछ अन्य विचारकों के अनुसार इस अवस्था में विशुद्ध आनंद की प्राप्ति होती है मोक्ष के दो प्रकार होते हैं - (a) जीवनमुक्ति (b) और विदेहमुक्ति। जैन, बौद्ध, सांख्य तथा वेदान्त के अनुसार व्यक्ति इसी जीवन में शरीर धारण करते हुए मोक्ष प्राप्त कर सकता है इसे वे (जीवनमुक्ति) कहते हैं मृत्यु के बाद मिलने वाले मोक्ष को विदेहमुक्ति कहते हैं

हिन्दु विचारक विश्व में दुःख पीड़ा एवं अपार कष्ट देखकर तिलमिला जाते हैं वे व्यक्ति को सर्वत्र बन्धनग्रस्त पाते हैं बंधन ही दुःख का मूल कारण है बंधन स्वयं अविद्या या अज्ञान का फल है

जा सकते । 'धर्म' का प्रयोग (Religion) शब्द से अधिक व्यापक है। Religion मनुष्य की केवल धार्मिक भावना को संतुष्ट करता है, परन्तु धर्म संपूर्ण जीवन को संतुष्ट करता है। डॉ० राधाकृष्णन के शब्दों में - "चारों वर्णों और चारों अवस्थाओं तथा चार पुरुषार्थों से संबद्ध मनुष्य के निःशेष कर्तव्यसमुदाय को धर्म कहा जाता है। मनु ने धर्म के दस लक्षण बताए हैं - धैर्य, क्षमा, इंद्रियनिग्रह, सात्विक संयम, अस्तेय, सत्य और क्रोध का अभाव। ये मनुष्य के साधारण धर्म हैं, मनुष्य के विशेष धर्म हैं। इनमें वर्णाश्रम-धर्म प्रमुख है। धर्म का ज्ञान होता है इस प्रश्न के उत्तर में मनु का कहना है "वेद, स्मृति, सदाचार और अपने लिए जो प्रिय है - ये ही धर्म के चार लक्षण हैं। वेदों और उपनिषदों में भी धर्म की विशद व्याख्या हुई है।

(ii) अर्थ - (Wealth) - अर्थ, धन या संपत्ति जीवन के लिए आवश्यक है। बिना धन के व्यक्ति की आवश्यकताएँ पूरी नहीं हो सकती। धन की प्रवृत्ति जन्मजात है। इसलिए धन का महत्व भी अत्यधिक है। आज के भौतिक युग में रुपये पैसे पर ही सर्वस्व निर्भर है। किसी विद्वान ने ठीक ही कहा है - "जिसके पास धन है वही कुलीन है, वह पंडित है, श्रुतवान और गुणी है वही दर्शनीय है और स्वर्ण की भाँति उसमें सभी गुण विद्यमान हैं। संस्कृत का यह श्लोकांश भी धन की महत्ता बतलाता है - "धनाद् धर्मः ततः सुखम्", अर्थात् धन से धर्म होता है और तब सुख मिलता है।

(iii) काम - (Enjoyment) - 'काम' को दो अर्थों में प्रयुक्त किया जाता है - सामान्य अर्थ और विशेष अर्थ। सामान्य अर्थ में विषयानुभवजन्य सुख काम है अर्थात् बाह्य वस्तु जो सुखद प्रतीत हो उसके अनुभव की इच्छा 'काम' है। काम के अंतर्गत केवल ऐंद्रिय जन्य सुख ही नहीं बल्कि मानसिक सुख भी आ जाते हैं। किसी सुखप्रद वस्तु की इच्छा काम है, जो चाही जाए। विशेष अर्थ में काम का अर्थ है ऐंद्रियजन्य सुख

B.A. Part-II Hons – Philosophy
IIIrd Paper – Ethics

Date Page

"What is Purushartha? Explain different kinds."
"पुरुषार्थ क्या है? इसके विभिन्न प्रकारों की व्याख्या कीजिए"

'पुरुषार्थ' शब्द दो शब्दों के मेल से बना है– पुरुष और 'अर्थ' इसलिए पुरुषार्थ वह है जो पुरुष के लिए आवश्यक एवं लाभदायक हो। दूसरे शब्दों में व्यक्ति के कर्मों के लक्ष्य को ही पुरुषार्थ कहा जाता है। जिनके लिए मनुष्य की चेष्टाएँ होती है वे ही उसके पुरुषार्थ है।" भारतीय दृष्टिकोण समन्वयवादी है। जीवन की सभी आवश्यकताओं से इसका संबंध रहता है। यही कारण है कि भारतीय विचारकों ने ऐसे चार आदर्श या साध्य बताए है जो मनुष्य के इहलोक और परलोक दोनों के प्रधान लक्ष्य बन जाते है। इन्हीं चारों आदर्शों से प्रेरित होकर मनुष्य के सभी कार्य होते है। ये पुरुषार्थ चार है–

(i) धर्म (Virtue)
(ii) काम (Enjoyment)
(iii) अर्थ (Wealth)
(iv) मोक्ष (Liberation)

अब हम इन चारों का अलग-अलग वर्णन इस प्रकार करते है:–

(i) धर्म (Virtue) – 'धर्म' का अर्थ धारण करने योग्य कर्म है। 'धर्म' से यहाँ मनुष्य के उन सभी कर्तव्यों का बोध होता है जिन्हें शास्त्रों ने सभी मानवीय क्षेत्रों को ध्यान में रखकर निर्धारित किया है। जीवन का धर्ममय होना आवश्यक है। जीवन के सभी क्षेत्रों में कर्तव्यों का समुचित पालन करनेवाला व्यक्ति ही सच्चा धार्मिक व्यक्ति है। धर्म जीवन का एक अंश नहीं है बल्कि यह संपूर्ण जीवन में व्याप्त है। जीवन में धर्म का अत्यधिक महत्व है। अर्थ और काम उसी अंश तक वांछित है जिस हद तक इनमें धार्मिक आचरण में मदद मिलती है। पाश्चात्य दर्शन में धर्म को Religion कहते है। Religion और धर्म (Virtue) पर्यायवाची नहीं है